सूरह — एक कहानी

सूरह अद-दुहा

चाश्त का उजाला

पूरा सफ़र — आपके रब ने न छोड़ा, न नाराज़ हुए —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 93 • 11 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

वद्-दुहा। वल्-लैलि इज़ा सजा
1-2. क़सम है चाश्त के उजाले की, और रात की जब वो छा जाए।

मा वद्द-अ'क रब्बुक व मा क़ला
3. आपके रब ने न आपको छोड़ा और न नाराज़ हुए।

व लल्-आख़िरतु ख़ैरुल्-लक मिनल्-ऊला
4. और आख़िरत आपके लिए पहली से बेहतर है।

व ल-सौफ़ यु'तीक रब्बुक फ़-तर्ज़ा
5. और अनक़रीब आपका रब आपको इतना देगा कि आप राज़ी हो जाएँगे।

अलम यजिद्क यतीमन फ़-आवा
6. क्या उसने आपको यतीम नहीं पाया, फिर जगह दी?

व अम्मा बि-नि'मति रब्बिक फ़-हद्दिस
11. और अपने रब की नेमत का चर्चा कीजिए।

जब वही रुक गई

बेटा, इस सूरह को समझने के लिए पहले यह जानना ज़रूरी है कि यह किस लम्हे में उतरी।

वही का सिलसिला शुरू हो चुका था, और फिर — कुछ अरसे के लिए रुक गया। जिब्रील (अलैहि0) आना बंद हो गए। दिन गुज़रते गए, और आसमान ख़ामोश रहा।

और मक्का के मुश्रिकीन को यह बात पता चल गई। रिवायतों में आता है कि उन्होंने ताना देना शुरू किया: 'मुहम्मद के रब ने उन्हें छोड़ दिया', 'उनके रब उनसे नाराज़ हो गए'।

बेटा, अब उस दिल का तसव्वुर कीजिए। एक शख़्स जिसने आसमान से कलाम का ज़ायक़ा चख लिया हो, और फिर वो दरवाज़ा बंद हो जाए। वो अज़ाब जो ताने देने वालों ने दिया, वो अलग; मगर असल तकलीफ़ यह थी कि महबूब की तरफ़ से ख़ामोशी थी।

आप 😭 ग़मगीन थे।

और फिर यह सूरह उतरी — और देखिए यह किस अंदाज़ में शुरू होती है।

'वद्-दुहा — क़सम है चाश्त के उजाले की — वल्-लैलि इज़ा सजा — और रात की जब वो छा जाए, थम जाए।'

बेटा, अल्लाह दो क़समें खा रहे हैं: दिन की रौशनी की, और रात के सुकूत की। और यही जवाब का पहला हिस्सा है। जैसे सूरज अपने वक़्त पर चढ़ता है और रात अपने वक़्त पर उतरती है — उसी तरह वही का आना और उसका ठहरना, दोनों एक ही निज़ाम का हिस्सा हैं। रात अँधेरा है, मगर वो मग़फ़ूर नहीं होती; वो सुकून और आराम है, और उसके बाद सुबह आती है।

और ग़ौर कीजिए कि 'सजा' का मतलब है थम जाना, सुकूत में आ जाना — बिल्कुल वही कैफ़ियत जो वही के रुकने की थी। अल्लाह ने उनकी हालत को ही क़सम का मौज़ू बना दिया।

न छोड़ा, न नाराज़ हुए

'मा वद्द-अ'क रब्बुक व मा क़ला — आपके रब ने न आपको छोड़ा और न वो नाराज़ हुए।'

बेटा, इस एक आयत के हर लफ़्ज़ पर ग़ौर कीजिए, क्योंकि यह क़ुरआन की सबसे शफ़ीक़ आयतों में से है।

'मा वद्द-अ'क' — 'तौदी" वो लफ़्ज़ है जो अलविदा कहने के लिए इस्तेमाल होता है। यानी: उन्होंने आपको अलविदा नहीं कहा। यह ताल्लुक़ ख़त्म नहीं हुआ।

'व मा क़ला' — 'क़िला' बुग़्ज़ और ना-राज़गी को कहते हैं। यानी: वो आपसे नाराज़ भी नहीं हुए।

और अब वो बात देखिए जो दिल को पिघला देती है, बेटा: 'रब्बुक' — आपके रब। उस लम्हे में जब उन्हें लग रहा था कि ताल्लुक़ टूट गया, अल्लाह ने इसे 'अल्लाह' कह कर

नहीं, बल्कि 'तुम्हारा रब' कह कर बयान किया। निस्बत को क़ायम रख कर तसल्ली दी गई।

बेटा, और एक बात जो इस आयत में छुपी है। अल्लाह ने यह नहीं फ़रमाया कि 'तुम्हारे रब ने तुम्हें छोड़ दिया था, मगर अब लौट आए'। उन्होंने फ़रमाया: छोड़ा ही नहीं था। यानी वो ख़ामोशी भी ताल्लुक़ के अंदर थी, उसके बाहर नहीं।

'व लल्-आख़िरतु ख़ैरुल्-लक मिनल्-ऊला — और बेशक आख़िरत आपके लिए पहली से बेहतर है।'

बेटा, यह जवाब का दूसरा हिस्सा है। जो आपके सामने आ रहा है वो उससे बेहतर है जो गुज़र चुका। और यह हर मोमिन के लिए एक क़ानून है: आपका आने वाला कल, अगर आप अल्लाह के साथ रहें, आपके गुज़रे हुए कल से बेहतर है — चाहे अभी कितना ही बुरा लग रहा हो।

'व ल-सौफ़ यु'तीक रब्बुक फ़-तर्ज़ा — और अनक़रीब आपका रब आपको इतना देंगे कि आप राज़ी हो जाएँगे।'

बेटा, इस आयत को उलमा ने क़ुरआन की सबसे उम्मीद-अफ़ज़ा आयत कहा है। क्योंकि इसमें कोई मिक़दार बताई ही नहीं गई — सिर्फ़ यह कहा गया कि देते रहेंगे यहाँ तक कि आप ख़ुद कह दें कि बस, अब मैं राज़ी हूँ।

सोचिए, बेटा: किसी चीज़ की हद नहीं बताई गई। हद वो है जहाँ बंदा ख़ुश हो जाए। और रिवायत में आता है कि नबी ﷺ अपनी उम्मत के बारे में राज़ी न होंगे जब तक उनमें से एक भी जहन्नम में बाक़ी हो।

तीन यादें

और अब बेटा, अल्लाह तीन सवाल पूछते हैं — और तीनों उनकी अपनी ज़िंदगी से हैं। यह दलील देने का सबसे प्यारा तरीक़ा है: ए'तिराज़ का जवाब गुज़री हुई मेहरबानी से।

'अलम यजिद्क यतीमन फ़-आवा — क्या उसने आपको यतीम नहीं पाया, फिर जगह दी?'

बेटा, आप ﷺ पैदाइश से पहले अपने वालिद खो चुके थे, छह साल की उम्र में वालिदा, और फिर अपने दादा। और हर बार, किसी न किसी ने उन्हें अपने साथ लगा लिया — दादा अब्दुल मुत्तलिब, फिर चचा अबू तालिब। अल्लाह फ़रमा रहे हैं: वो पनाह मैंने दी थी।

और लफ़्ज़ 'आवा' देखिए — यह सिर्फ़ 'जगह दी' नहीं है, इसमें समेट लेने, पनाह देने, अपने साथ लगा लेने का मानी है।

'व वजदक ज़ाल्लन फ़-हदा — और आपको राह ढूँढता पाया, तो राह दिखाई।'

बेटा, यहाँ 'ज़ाल्लन' का मतलब गुमराही नहीं है — अंबिया कभी शिर्क या गुमराही पर नहीं रहे। उलमा ने इसकी तफ़्सीर की: आप वही और शरीअत की तफ़सीलात नहीं जानते थे, और उस हक़ की तलाश में थे जो आपको अभी नहीं मिला था। और अल्लाह ने आपको वो राह दिखा दी।

'व वजदक 'आइलन फ़-अग़ना — और आपको तंगदस्त पाया, तो बे-नियाज़ कर दिया।'

बेटा, आप ﷺ ने अपनी जवानी में माल के बग़ैर गुज़र किया, और फिर अल्लाह ने रिज़्क़ के दरवाज़े खोले। मगर देखिए 'अग़ना' का असल मानी — इसे उलमा ने दिल की बे-नियाज़ी भी कहा है। क्योंकि आप ﷺ ने अपने आख़िरी दिनों तक सादा ज़िंदगी गुज़ारी; जो बे-नियाज़ी उन्हें दी गई वो दिल की थी। और नबी ﷺ ने ख़ुद फ़रमाया: ग़िना माल की कसरत का नाम नहीं, ग़िना दिल का बे-नियाज़ होना है।

और बेटा, एक बात इससे भी सीखिए। जब किसी को तसल्ली देनी हो तो सिर्फ़ यह मत कहिए कि 'सब ठीक हो जाएगा'। अल्लाह ने तीन ठोस मिसालें दीं — तीन ऐसे मौक़े जहाँ उन्होंने पहले मदद की थी। गुज़री हुई मदद ही आने वाली मदद की सबसे मज़बूत दलील है।

बेटा, तीन कमियाँ, और तीन जवाब। और इनका सबक़ यह है: अपने गुज़रे हुए कल में उसकी मदद का रिकॉर्ड देखिए, और अपने आज के बारे में परेशान मत होइए। जिस ज़ात ने तीन बार आपको सँभाला, वो चौथी बार भी सँभालेंगे।

तो अब आप क्या करें

और अब, बेटा, सूरह का सबसे ख़ूबसूरत हिस्सा। तीन एहसानात गिनवाने के बाद, अल्लाह तीन हुक्म देते हैं — और हर हुक्म ठीक उसी एहसान से जुड़ा हुआ है।

'फ़-अम्मल्-यतीम फ़-ला तक़्हर — तो यतीम पर सख़्ती मत कीजिए।'

आपको यतीम पाया गया और जगह दी गई — तो अब किसी यतीम को धुत्कारिए मत। बेटा, 'क़हर' का मतलब है दबा देना, ज़बरदस्ती करना, उस पर अपना ज़ोर जताना जो कमज़ोर है। यतीम के साथ वो करना आसान है क्योंकि उसके पीछे कोई नहीं।

'व अम्मस्-साइल फ़-ला तन्हर — और माँगने वाले को मत झिड़कीए।'

आपको तंगदस्त पाया गया और बे-नियाज़ी दी गई — तो अब किसी माँगने वाले को झिड़कीए मत। बेटा, आयत यह नहीं कहती कि हर माँगने वाले को दे दीजिए — हो सकता है आपके पास न हो, या देना मुनासिब न हो। यह कहती है: झिड़कीए मत। इनकार भी इज़्ज़त के साथ कीजिए। और उलमा ने 'साइल' में वो भी शामिल किया है जो इल्म का सवाल करता है — उससे भी नरमी से पेश आइए।

और बेटा, रिवायतों में आता है कि नबी ﷺ के पास जो भी सवाली आता, अगर उनके पास कुछ होता तो दे देते, और अगर न होता तो नरमी से माज़रत कर लेते या ख़ामोश रहा करते — मगर कभी किसी को झिड़का नहीं। और उनके घर का दरवाज़ा कभी किसी मोहताज पर बंद नहीं हुआ।

'व अम्मा बि-नि'मति रब्बिक फ़-हद्दिस — और अपने रब की नेमत का चर्चा कीजिए।'

आपको राह दिखाई गई — तो अब उस हिदायत की बात कीजिए। बेटा, 'हद्दिस' का मतलब है बयान करना, ज़िक्र करना, लोगों को बताना। और पहली और सबसे बड़ी नेमत वही हिदायत है जो दी गई।

बेटा, इसमें एक नाज़ुक तवाज़ुन है। यह फ़ख़्र करने का हुक्म नहीं — यह शुक्र के इज़हार का हुक्म है। नबी ﷺ ने फ़रमाया: जो शख़्स लोगों का शुक्रिया अदा नहीं करता, वो अल्लाह का शुक्र अदा नहीं करता। और नेमतों का ज़िक्र करना ख़ुद शुक्र

की एक शक्ल है।

और देखिए इस सूरह का पूरा नक़्शा, बेटा: अल्लाह ने पहले उनके ग़म का जवाब दिया, फिर उन्हें उनका माज़ी याद दिलाया, और फिर उन्हें दूसरों की तरफ़ मोड़ दिया। यह इलाज की तरतीब है — जो शख़्स तकलीफ़ में हो, उसे आख़िर में किसी और के काम पर लगा दो।

बेटा, और यह आप पर भी लगता है। आप कभी न कभी यतीम थे, या तंगदस्त, या भटके हुए, या अकेले। जो आपको उस हाल में मिला था, वही आज किसी और को दीजिए। जिस दरवाज़े से आपको पनाह मिली थी, वो दरवाज़ा किसी और के लिए खोल दीजिए।

इस सूरह से क्या सीखा

1. ख़ामोशी तर्क नहीं होती — जैसे रात 'सजा' होती है, थम जाती है, और उसके बाद सुबह आती है।

2. 'मा वद्द-अ'क रब्बुक' — जिस लम्हे में ताल्लुक़ टूटता लग रहा था, उसी लम्हे में निस्बत जताई गई।

3. आपका आने वाला कल आपके गुज़रे कल से बेहतर है, अगर आप उसके साथ रहें।

4. 'फ़-तर्ज़ा' — क़ुरआन की सबसे उम्मीद-अफ़ज़ा आयत: देना तब तक जारी, जब तक बंदा ख़ुद राज़ी न हो जाए।

5. अपने माज़ी में उसकी मदद का रिकॉर्ड देखिए — जिसने तीन बार सँभाला, वो चौथी बार भी सँभालेगा।

6. हर नेमत के साथ एक ज़िम्मेदारी जोड़ दी गई: पनाह मिली तो यतीम पर सख़्ती नहीं; बे-नियाज़ी मिली तो सवाली को झिड़कना नहीं; हिदायत मिली तो उसका चर्चा।

7. इनकार भी इज़्ज़त के साथ — आयत देना लाज़िम नहीं करती, झिड़कना मना करती है।

या अल्लाह, जब आपकी तरफ़ से ख़ामोशी हो तब भी हमारे दिल को क़ायम रखिए, और जो हमें मिला था वो दूसरों तक पहुँचाने वाला बना दीजिए। आमीन।